सूर्य-साधना है छठ-व्रत





सृष्टि के प्रत्येक प्राणियों के जीवन स्रोत सूर्य हैं। दरअसल, सूर्य की साधना से ही आध्यात्मिक ऊर्जा की तलाश पूरी होती है। इसलिए सूर्य-उपासना का प्रतीक छठ-व्रत है। आइए, हम सभी छठ व्रत के अवसर पर सूर्य-वंदना करें और जीवन प्रदान करने के लिए उन्हें सादर अर्घ्य समर्पित करें।

सूर्यदेव को संध्याकाल में जल और दूध का अर्घ्य समर्पित किया जाता है। कार्तिक शुक्ल षष्ठी को संपन्न होने वाला सूर्य-षष्ठी व्रत, अथवा छठ उत्तर-भारत सहित देश के अन्य कई भागों में मनाया जाता है। वास्तव में, सूर्य को समर्पित यह व्रत सूर्य-साधना का ही स्वरूप है। छठ के अवसर पर भगवान सूर्य के प्रति श्रद्धालुओं की श्रद्धा और खुशी देखते ही बनती है। सच तो यह है कि पूर्व-वैदिक काल में ही सूर्य पूजा के प्रमाण मिलते हैं। वैदिक युग में जिन देवताओं को सर्वाधिक महत्व मिला, उनमें सूर्य, अग्नि और इंद्र प्रधान हैं। सूर्य के बिना अग्नि और इन्द्र का भी महत्व कम हो जाता है।

पालनकर्ता हैं सूर्य

सूर्य स्वयं एक जलता हुआ आग का गोला हैं। सूर्य के समक्ष अग्नि कुछ भी नहीं है। ऐसी मान्यता है कि वर्षा के देवता इंद्र हैं, लेकिन सूर्य अपनी किरणों से जल खींचकर उसे मेघ में परिवर्तित करते हैं, तभी पृथ्वी पर वर्षा संभव होती है।

इस प्रकार सूर्य देवताओं के देवता हैं, अत: अध्यात्म के प्राण हैं। चूंकि अन्य देवता अदृश्य हैं, इसलिए उनके अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न भी लगाया जा सकता है। सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं, जो सम्पूर्ण जगत के पालनकर्ता हैं। इसको नकारना असंभव है। इसलिए वेदों में सूर्य को चर-अचर सभी पदार्थो की आत्मा माना गया है--सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

स्फूर्तिदायक हैं सूर्य

सूर्य हमारे पोषक ही नहीं हैं, बल्कि कई रोगों के नाशक भी हैं। ऋग्वेद में सूर्य की स्तुति करते हुए उनकी कई विशेषताओं के बारे में बताया गया है। हे सूर्य आप जिस ज्योति से अंधकार को नष्ट करते हैं तथा समस्त संसार में स्फूर्ति उत्पन्न करते हैं, उसी से हमारे समग्र अन्नों के अभाव, यज्ञों के अभाव, रोग तथा दु:स्वप्नों के कु-प्रभाव को दूर कीजिए।

अथर्ववेद के अनुसार, सूर्य हमारी आंखों के अधिपति हैं, वे हमारे रक्षक हैं। [अथर्व--5/24/9] गीता में भगवान श्रीकृष्ण को सूर्य बताया गया है। जब स्वयं ईश्वर सूर्य के पर्याय हो गए, तो सूर्य-साधना की आध्यात्मिकता सहज ही समझी जा सकती है।

पूरी शुद्धता जरूरी

छठ पूजा के दौरान भगवान सूर्य की साधना की जाती है। दरअसल, सूर्य-षष्ठी व्रत में चार दिन लग जाते हैं। इन चार दिनों में व्रत करने वालों को पूरी शुद्धता बरतनी होती है। प्रथम दिन अर्थात् चतुर्थी को दोनों समय केवल कद्दू, अरवा चावल तथा चने की दाल तथा सेंधा नमक मिश्रित भोज्य पदार्थ ग्रहण करना होता है। ऐसी मान्यता है कि पंचमी के दिन अन्न तो दूर, जल भी ग्रहण नहीं किया जाता है।

सायंकाल स्न:काल से लेकर सप्तमी के प्रात:काल तक अर्थात् चौबीस घंटों तक जल की एक बूंद भी ग्रहण नहीं की जाती है। षष्ठी की संध्या में प्रथम अर्घ्य और सप्तमी की सुबह द्वितीय अर्घ्य अर्पित किया जाता है। इसके पश्चात् ही यह व्रत; प्रसाद ग्रहण कर तोड़ा जाता है। छठ व्रत मुख्यतया महिलाएं करती हैं। लेकिन कई स्थानों पर पुरुष भी हर्षोल्लास के साथ छठ व्रत करते हैं। वास्तव में, यह व्रत मूलत: लोक व्रत है, अत: इससे सम्बन्धित अनेक लोक-कुछ पंक्तियां

केलवा जे फरला घवध से
ता ऊपर सुगा मड़राय।
तीरवा जो मरबो धनुष से
सुगा गिरे मुरछाय।

यह सच है कि गृहस्थ धर्म का पालन करने वाले अन्य साधना करने की स्थिति में नहीं होते हैं। इसलिए छठ व्रत के द्वारा ही वे आध्यात्मिक साधना कर संतुष्टि-लाभ प्राप्त करते हैं। कहते हैं कि सूर्य की साधना करने वाले अपनी चेतना को जाग्रत कर लेते हैं, जिससे कि सूर्य से एकाकार होने की अनुभूति प्राप्त करने में वे सफल हो जाते हैं। उर्जा के स्रोत

सूर्य आध्यात्मिक ऊर्जा के सर्वोच्च स्रोत माने जाते हैं। छठ व्रत की वैज्ञानिकता पूरी तरह सिद्ध हो चुकी है। यह सर्व ज्ञात है कि जल सभी पदार्थो की तुलना में ऊर्जा ग्रहण करने में सबसे आगे होता है। बिजली का जरा-सा करेंट लगने से ही सरोवर-भरा जल झटका देने लगता है।

इस पर्व में सूर्य को अर्घ्य कमर तक जल में खड़े होकर दिया जाता है। सच तो यह है कि साधक लंबे समय तक जल में मिश्रित सूर्य की किरणों की आध्यात्मिक ऊर्जा को ग्रहण करता रहता है। कई व्रतधारी तो अपराह्न दो बजे से ही जल में खड़े रहकर सूर्य-साधना करते हैं।

यह भी वैज्ञानिक तथ्य है कि सूर्य की किरणें जब जल को स्पर्श करती हैं, तो जल से एक विशेष प्रकार की किरणें निकलती हैं, जो कि शरीर के अंग-प्रत्यंग के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। यही वजह है कि आज छठ- व्रत बिहार, पूर्वी उत्तर-प्रदेश की सीमा लांघकर दिल्ली, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल सहित देश के अन्य कई भागों तक पहुंच चुका है।



राम-सीता ने भी किया छठ का पर्व

ऐसी मान्यता है कि लंका विजय के पश्चात चौदह वर्ष के वनवास की अवधि पूरी कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम दीपावली के दिन अयोध्या लौटे थे। अपने चहेते राजा राम और लक्ष्मीरूपी सीता पाकर अयोध्या धन्य हो गई थी। राज्यभर में घी के दीए जलाए गए थे।

राम के राज्याभिषेक के बाद रामराज्य की स्थापना का संकल्प लेकर राम और सीता ने कार्तिक शुक्ल षष्ठी को उपवास रखकर प्रत्यक्ष देव भगवान सूर्य की आराधना की थी और सप्तमी को सूर्योदय के समय अपने अनुष्ठान को पूर्ण कर प्रभु से रामराज्य की स्थापना का आशीर्वाद प्राप्त किया था। तब से छठ का पर्व लोकप्रिय हो गया।

सूर्य षष्ठी का उपवास करने वाले साधक कार्तिक शुक्ल चतुर्थी की शाम को लौकी की सब्जी और रोटी का पारण कर उपवास प्रारंभ करते हैं। इसे खरना अथवा संझवत कहा जाता है। 24 घंटे के उपरांत पंचमी तिथि को गुड़ से बनी खीर और रोटी का भोग लगाते हैं।

तब से मुख्य पर्व छठ का उपवास प्रारंभ होता है। 24 घंटे निर्जल उपवास रहकर षष्ठी को अस्ताचल सूर्य की अभ्यर्थना जल में खड़े होकर की जाती है तथा लगातार लगभग 36 घंटे के निर्जल उपवास के बाद सप्तमी को सूर्योदय का पूजन-अर्चन करके त्योहार पूर्ण होता है।

पंचमी के दिन शुद्ध घी और गुड़ से पकवान बनाया जाता है जिसे ठेकुआ के नाम से जाना जाता है। बांस की टोकनी में प्रति साधक एक-एक कलसूप रखा जाता है जिसमें उपलब्ध सभी प्रकार के फूल, फल, सब्जी आदि सजाए जाते हैं। घी के दीए रखकर पूजा की टोकरी सर-माथे रखकर घाट पर ले जाना बड़े ही सौभाग्य की बात मानी जाती है।

सूर्य साधक के परिवार का प्रत्येक व्यक्ति स्वच्छ परिधान में, नंगे पैर, सिर पर पूजा की टोकरी लिए हुए घाट पर जाते हुए बड़े ही अद्भुत प्रतीत होते हैं। बड़े शहरों में जगह-जगह पर कुंड या हौदनुमा घाट का निर्माण किया जाता है और जल से भरे हुए कुंड में गंगा जल डालकर मान लिया जाता है कि पतित पावन गंगा यही है।

दूर-दराज में नौकरी करने वाले लोग छठ पूजा में सम्मिलित होने के लिए अवकाश लेकर आते हैं। उल्लास में इसी दिन निर्मित गंगा घाट के आसपास पतंग उड़ाने की परंपरा है और पटाखे फोड़कर अपने हर्ष का प्रदर्शन किया जाता है। छठ का प्रसाद बांटना और पाना सौभाग्य की बात मानी जाती है।

छठ पर्व पर लोकगीत की परंपरा = -

वैसे तो हर तीज-त्योहार पर लोकगीतों की परंपरा रही है किंतु छठ पर्व पर विशेष धुन और विशिष्ट अंदाज में लोकगीत गाने की परंपरा है। महिलाएं समूह में लोकगीत गाते हुए चलती हैं यथा =

कांचे ही बास के बहगिया।
बंहगी लचकत जाय।
बाट जे पूछेला बटोहिया।
इ दल केकरा के जाय।
आन्हर होइहे रे बटोहिया
इ सूरूज बाबा के जाय।
इ आदित बाबा के जाय।

वास्तुदोष निवारण के आसान उपाय

- अपने घर के उत्तरकोण में तुलसी का पौधा लगाएं।
- हल्दी को जल में घोलकर एक पान के पत्ते की सहायता से अपने सम्पूर्ण घर में छिडकाव करें। इससे घर में लक्ष्मी का वास तथा शांति भी बनी रहती है.
- अपने घर के मन्दिर में घी का एक दीपक नियमित जलाएं तथा शंख की ध्वनि तीन बार सुबह और शाम के समय करने से नकारात्मक ऊर्जा घर से बहार निकलती ह।
- घर में सफाई हेतु रखी झाड़ू को रस्ते के पास नहीं रखें। यदि झाड़ू के बार-बार पैर का स्पर्थ होता है, तो यह धन-नाश का कारण होता ह। झाड़ू के ऊपर कोई वजनदार वास्तु भी नहीं रखें।
- अपने घर में दीवारों पर सुन्दर, हरियाली से युक्त और मन को प्रसन्न करने वाले चित्र लगाए। इससे घर के मुखिया को होने वाली मानसिक परेशानियों से निजात मिलती है।
- वास्तुदोष के कारण यदि घर में किसी सदस्य को रात में नींद नहीं आती या स्वभाव चिडचिडा रहता हो, तो उसे दक्षिण दिशा की तरफ सिर करके शयन कराएं। इससे उसके स्वभाव में बदलाव होगा और अनिद्रा की स्थिति में भी सुधार होगा।
- अपने घर के ईशान कोण को साफ सुथरा और खुला रखें। इससे घर में शुभत्व की वृद्धि होती ह।
- अपने घर के मन्दिर में देवी-देवताओं पर चढ़ाए गए पुष्प-हार दूसरे दिन हटा देने चाहिए और भगवान को नए पुष्प-हार अर्पित करने चाहिए।
- घर के उत्तर-पूर्व में कभी भी कचरा इकट्ठा न होने दें और न ही इधर भारी मशीनरी रख।
- अपने वंश की उन्नति के लिये घर के मुख्यद्वार पर अशोक के वृक्ष दोनों तरफलगाए।
- यदि आपके मकान में उत्तर दिशा में स्टोररूम है, तो उसे यहाँ से हटा द। इस स्टोररूम को अपने घर के पश्चिम भाग या नैऋत्य कोण में स्थापित करें।
- घर में उत्पन्न वास्तुदोष घर के मुखिया को कष्टदायक होते ह। इसके निवारण के लिये घर के मुखिया को सात मुखी रूद्राक्ष धारण करना चाहिए.
- यदि आपके घर का मुख्य द्वार दक्षिणमुखी है, तो यह भी मुखिया के के लिये हानिकारक होता ह। इसके लिये मुख्यद्वार पर श्वेतार्क गणपति की स्थापना करनी चाहिए।
- अपने घर के पूजा घर में देवताओं के चित्र भूलकर भी आमने-सामने नहीं रखने चाहिए इससे बड़ा दोष उत्पन्न होता ह।
- अपने घर में ईशान कोण अथवा ब्रह्मस्थल में स्फटिक श्रीयंत्र की शुभ मुहूर्त में स्थापना करें। यह यन्त्र लक्ष्मी प्रदायक भी होता ही है, साथ ही साथ घर में स्थित वास्तुदोषों का भी निवारण करता ह।
- घर में किसी भी कमरे में सूखे हुए पुष्प नहीं रखने द। यदि छोटे गुलदस्ते में रखे हुए फूल सूख जाएं, तो उस्मे नए पुष्प लगा दें और सूखे पुष्पों को निकालकर बाहर फेंक दें।
- सुबह के समय थोड़ी देर तक निरंतर बजने वाली गायत्री मंत्र की धुन चलने द। इसके अतिरिक्त कोई अन्य धुन भी आप बजा सकते ह।